7. मैथिलीशरण गुप्त

लेखक परिचय –

राष्ट्रकवि की उपाधि से सम्मानित भारतीय संस्कृति के महान् उद्‌गाता श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश के चिरगाँव (जिला झाँसी) में सन् 1886 में हुआ। गुप्त जी द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतिनिधि कवि हैं। इनके पिता सेठ रामचरण कविता प्रेमी थे और 'कनकलता' उपनाम से कविताएँ लिखते थे। इनकी प्रारम्भिक कविताएँ 'वैश्योपकारक' में छपीं; किन्तु बाद में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने पर 'सरस्वती' में लिखना प्रारम्भ किया और उन्हीं की प्रेरणा से खड़ी बोली को कविता की सरसता के अनुरूप ढालने का कार्य किया। गुप्त जी की रचनाओं में राष्ट्रीयता, स्वदेश प्रेम, युगीन चेतना और भारतीय संस्कृति की छाप पूरी तरह दिखाई देती है। 'भारत–भारती' नामक रचना से इन्हें अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। देश एवं मातृभूमि के प्रति गर्व तथा गौरव, राष्ट्रीय जागरण से ओत-प्रोत 'भारत भारती' की कविताओं ने इन्हें राष्ट्रकवि के रूप में प्रतिष्ठित किया। भारत सरकार ने इन्हें राज्य सभा का सदस्य भी मनोनीत किया।

गुप्त जी की रचनाओं में मानव जीवन और समाज के विविध अंगों की समस्याओं का चित्रण हुआ है। उनमें भारतीय संस्कृति की प्राचीनता के प्रति पूज्य भाव है तो नए परिवर्तन के प्रति भी तीव्र उत्साह है। द्विवेदी युगीन आदर्शवादी नैतिकता, पवित्रता, पौराणिक आख्यानों की तर्क संगत व्याख्या एवं समसामयिक राष्ट्रीय हलचलों की तीव्र गूँज उनके काव्य में है। वे सामाजिक उत्पीड़न, राजनीतिक दासता तथा धार्मिक संकीर्णता के विरोधी हैं। उन्हें भारतीय सांस्कृतिक नव जागरण का कवि कहा जाता है।

गुप्त जी ने खण्डकाव्य, प्रबन्धकाव्य, नाटक एवं अनूदित काव्य आदि विधाओं में लिखा है। इनकी रचनाओं में 'भारतभारती', 'जयद्रथवध', 'पंचवटी', 'गुरुकुल','झंकार', 'साकेत', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'जयभारत', 'सिद्धराज', 'विष्णु प्रिया' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। 'साकेत' महाकाव्य ने गुप्त जी को कीर्ति के शिखर पर पहुँचाया; जिसमें राम के पावन चरित्र को आधुनिक परिवेश में चित्रित करते हुए उपेक्षिता उर्मिला के चरित्र को त्यागमयी नारी के रूप में चित्रित किया गया है।

पाठ-परिचय –

प्रस्तुत संकलन गुप्त जी के प्रसिद्ध काव्य 'यशोधरा' से संकलित किया गया है। यशोधरा में गौतम बुद्ध के राजगृह को त्यागकर चले जाने के पश्चात् उनकी पत्नी यशोधरा के हृदय में उत्पन्न भावों का मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण है। गौतम बुद्ध अपनी पत्नी यशोधरा एवं पुत्र राहुल को सोता हुआ छोड़कर चले जाते हैं। प्रातः काल होने पर यशोधरा को जब पता लगता है, तो वह आत्मग्लानि से भरकर वेदना प्रकट करती है। उसे इस बात का अधिक दुःख है कि उसके पति उसे बिना बताए चले गए। वह कहती है कि ऐसा करके उन्होंने सम्भवतः हम क्षत्राणी नारियों को समझने में भूल कर दी है। हम क्षत्राणी नारियाँ देश की रक्षा के लिए अपने पतियों को खुशी-खुशी रण क्षेत्र में भेज देती हैं। फिर वे तो जगत कल्याण हेतु सिद्धि प्राप्त करने के लिए गए हैं। इस संकलन में यशोधरा की सहज नारीगत वेदना, क्षोभ, संताप के साथ-साथ उसके मातृत्व और वात्सल्य का भी प्रभावशाली अंकन है।

'भारत की श्रेष्ठता' काव्यांश गुप्त जी के प्रसिद्ध काव्य 'भारत भारती' से लिया गया है; जिसमें उन्होंने पराधीनता और निराशा में डूबी भारतीय जनता को जाग्रत होने का आह्वान किया है। 'भारत भारती' राष्ट्रीयता की उद्घोषक रचना है। राष्ट्रीय आंदोलन के समय इस रचना को अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। प्रस्तुत अंश में गुप्त जी ने भारतवर्ष के गौरवमय अतीत का वर्णन किया है। प्राकृतिक वैभव से समृद्ध भारत भूमि ऋषिया-महर्षियों की भूमि रही है। इस भूमि पर अनेक वीर, ऋषि-मुनि, दानी और चिंतकों ने जन्म लिया है। भारत भूमि संसार के सम्पूर्ण देशों में सिरमौर है। यह वह पुण्य भूमि है; जिसके निवासी समस्त विद्याओं एवं कला-कौशल के प्रथम आचार्य रहे हैं। हम ऐसे महान मानवों की संतति होकर भी दुर्गति को प्राप्त हो रहे हैं।

मूल पाठ –

यशोधरा

(संकलित अंश)

सिद्धि–हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात;
पर चोरी–चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ–बाधा ही पाते ?
मुझको बहुत उन्होंने माना,
फिर भी क्या पूरा पहचाना ?
मैंने मुख्य उसी को जाना,
जो वे मन में लाते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में, –
क्षात्र धर्म के नाते ।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
हुआ न वह भी भाग्य अभागा,
किस पर विफल गर्व अब जागा ?
जिसने अपनाया था, त्यागा ।
रहे स्मरण ही आते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते ,
पर इनसे जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते ?
गये तरस ही खाते।

सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
जाएँ, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुखी न हों इस जन के दुःख से,
उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से ?
आज अधिक वे भाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
गये, लौट भी वे आवेंगे,
कुछ अपूर्व-अनुपम लावेंगे ?
रोते प्राण उन्हे पावेंगे ?
पर क्या गाते-गाते,
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

भारत की श्रेष्ठता

भू-लोक का गौरव ,प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है ?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन ?भारतवर्ष है।।

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है ?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।
विधि ने किया नर-सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।।

यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी 'आर्य' हैं,
विद्या, कला-कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि हम अधोगति में पड़े ।
पर चिह्न उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।।

•••

शब्दार्थ –

सुसज्जित – अच्छी तरह, तैयार कर / प्राणों के प्रण – प्राणों की बाजी लगी हो / क्षात्र–धर्म – क्षत्रिय धर्म के कर्त्तव्य निर्वाह हेतु / विफल – व्यर्थ / निष्ठुर – दया रहित / उपालम्भ – उलाहना / भाते – अच्छे लगना / अपूर्व – अद्वितीय / अनुपम – अनोखा / सिद्धि हेतु – सिद्धि प्राप्त करने के लिए / व्याघात – पीड़ा / पथ बाधा – मार्ग में रुकावट / गिरि – पर्वत / उत्कर्ष – उत्थान / सिरमौर – सर्वश्रेष्ठ / पुरातन – पुराना / भवभूतियाँ – सांसारिक वैभव / आर्य – श्रेष्ठ (सदाचारी) / अधोगति – पतन / विधि – ब्रह्मा, ईश्वर।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. यह गौरव की बात कि स्वामी गये –
   (क) वैराग्य हेतु (ख) सिद्धि हेतु
   (ग) राज्य प्राप्ति हेतु (घ) तीर्थयात्रा हेतु ( )
2. यशोधरा को पीड़ा है कि उसके पति चले गए हैं–
   (क) सोता हुआ छोड़कर (ख) लक्ष्य बताए बिना
   (ग) चोरी-चोरी (घ) खाना खाए बिना ( )
3. कवि के अनुसार प्रकृति का पुण्य तीर्थ स्थल है –
   (क) भारत वर्ष (ख) हिमालय
   (ग) गंगा (घ) सागर ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. यशोधरा का काव्य रूप क्या है ?
2. यशोधरा दुःखी क्यों है ?
3. भारतवर्ष अन्य देशों का सिरमौर क्यों है ?
4. भारतवर्ष को प्रकृति का पुण्य तीर्थ-स्थल क्यों कहा जाता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. यशोधरा की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'दुःखी न हो इस जन के दुःख से' पंक्ति में यशोधरा ने 'जन' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है?
3. 'उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से' यशोधरा ने यह क्यों कहा है ?
4. कवि ने भारतवर्ष को भूलोक का गौरव क्यों बताया है ?अपने शब्दों में लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'यशोधरा' के पठित काव्यांश के आधार पर यशोधरा की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
2. मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि क्यों कहा जाता है?
3. 'भारत की श्रेष्ठता' में अभिव्यक्त भावों को अपने शब्दों में लिखिए।
4. भारतवर्ष के अतीत की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) 'स्वयं सुसज्जित करके..... कहकर जाते'।
   (ख) 'भू-लोक का गौरव.....भारतवर्ष'।
   (ग) 'यह पुण्य भूमि.....कुछ हैं खड़े'।

•••